और ... एक शे'र

शाम से कुछ बुझा सा रहता है
दिल हुआ है चराग़ मुफ़लिस का
-मीर तक़ी मीर

लोकमत समाचार
नागपुर, शुक्रवार, 19 जून 2015

लोकमत समाचार
तमसो मा ज्योतिर्गमय

जिंदगी वैसी नहीं है जैसी आप इसके लिए कामना करते हैं, यह तो वैसी बन जाती है जैसी आप इसे बनाते हैं.
■ एंथनी रयान

संपादकीय

एकाएक फिर बढ़ गया राजनीतिक तापमान

देश का राजनीतिक तापमान एकाएक फिर गरमा गया है. जाहिर है एक ओर जहां सत्तापक्ष के दिग्गज नेताओं पर एक 'भगौड़े' की मदद के आरोपों के चलते उनकी कुर्सी दांव पर है तो इधर महाराष्ट्र से लेकर उधर हिमाचल तक पिछली सरकार के मंत्रियों पर भ्रष्टाचार के आरोपों के चलते छापों का सिलसिला सा चल पड़ा है. सत्ता में आने के वक्त आक्रामक तेवर दिखाने वाली भाजपा जहां एक ओर सिलसिलेवार तरीके से नित नई घोषणाएं नित नए प्रयोग तो करती जा रही है, लेकिन दूसरी ओर उसके नेताओं का बड़बोलापन और कुछ गड़े मुर्दे उसकी छवि को धूमिल करने में लगे हैं. यह भी महज संयोग ही कहा जाएगा कि एक साल तक बेदाग रहने के सरकार के दावे को जुम्मे-जुम्मे चार दिन हुए और उसकी सबसे प्रतिष्ठित महिला नेता पर आईपीएल के भगौड़े ललित मोदी को 'मानवीय' आधार पर मदद करने का आरोप सार्वजनिक हो गया. भाजपा-सरकार अपने तईं बचाव में लगी है और यह महिला नेता यानी सुषमा स्वराज भी सोशल मीडिया पर पूरी तरह से सक्रिय हैं. विपक्ष को तो लगे हाथ मानो लॉटरी ही लग गई है. विपक्ष के तेवर तीखे होने लगे तो एक-एक कर छापों का सिलसिला शुरू हो गया. महाराष्ट्र, गुजरात होते हुए अब यह हिमाचल तक पहुंच गया है. महाराष्ट्र (छगन भुजबल) और गुजरात (शंकरसिंह वाघेला) में जहां पूर्व मंत्री जांच के घेरे में आ गए हैं तो हिमाचल में तो सीधे वर्तमान मुख्यमंत्री और पूर्व केंद्रीय मंत्री वीरभद्र सिंह सपरिवार घेरे में आ गए हैं. जैसा कि होता है घेरे में आने वाला पहली फुर्सत में इसे राजनीतिक साजिश करार दे रहा है. कौन सच है कौन गलत इसका तो फैसला अदालत कर ही देगी, लेकिन इस हकीकत से कोई इनकार नहीं कर सकता कि आज भारत की सबसे बड़ी कोई समस्या है तो वह है भ्रष्टाचार. शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जिसमें भ्रष्टाचार ना हो. क्या वाकई इस समस्या का कोई इलाज नहीं है? क्या यह केवल एक राजनीतिक हथियार ही बनकर रह जाएगा? स्विस बैंक में भारतीयों के धन में 10 फीसदी की गिरावट काले धन के खिलाफ अभियान का नतीजा है या फिर यह पैसा किसी और मार्ग से किसी और जगह या फिर देश में ही लाया जा रहा है. देखना यह भी होगा कि ये जो राजनीतिक तापमान बढ़ा है इसका हमें कोई लाभ होगा? क्या भ्रष्टाचार पर वाकई लगाम लगेगी? या हर बार की तरह यह केवल हमारा मन बहलाने का खेल भर है. ■■

जन्म दिवस

छत पर अंधेरे में बैठे रामाश्रयजी को याद है कि वे जिस गांव में पैदा हुए थे, उस जमाने में उनके यहां केक काटकर, मोमबत्तियां जलाकर 'हैप्पी बर्थडे टू यू' कहने का रिवाज तो कतई नहीं था लेकिन उनके जन्मदिन पर उनकी मां पंडितजी को बुलाकर उनके ग्रह दोषों के निवारण के लिए पूजा करवाया करती थी. जब वे नौ-दस वर्ष के थे तो उन्हें यह अच्छी तरह याद है कि किसी पंडे ने उनकी मां को बताया था कि ग्रह दोष निवारण के लिए उनके जन्मदिन पर उनके वजन के बराबर 'अन्नदान' होना चाहिए. तब से लेकर जब तक मां जीवित रही, यह अन्नदान होता रहा. मां गई और फिर उन्हें याद नहीं कि कभी किसी ने उनके जन्मदिन पर कभी किसी विशेष तरह का आयोजन किया हो. खैर, आज उन्हें बेटे के पास शहर आए लगभग एक महीना होने को आया है. सुबह उन्हें बेटे से पता चला कि आज शाम का समय उन्हें छत पर गुजारना होगा. दरअसल, इस समय नीचे फ्लैट में उनकी बहू का जन्मदिन मनाया जा रहा है और बेटा जानता है कि ऐसे मौके पर उन्हें कहां रहना चाहिए? बेटा सिर्फ यह नहीं जानता कि कभी आज ही के दिन उसकी दादी अन्नदान कर उनका भी जन्मदिन मनाती थी. और अपना न सही, पर अपने इस नासमझ बेटे का जन्मदिन तो वे और उसकी दिवंगत मां अभी कुछ वर्ष पहले तक हमेशा ही धूमधाम से मनाते रहे हैं. ■■

लघुकथा

सुभाष चंद्र

अब नतीजे दिखाने का समय

विश्वनाथ सचदेव
जाने-माने स्तंभकार

राजनीतिक दल और सरकारें हर छोटी-बड़ी चीज का राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश करते हैं, और इसमें कुछ गलत भी नहीं है. गलत यह तब हो जाता है, जब राजनीतिक लाभ उठाना ही दलों और सरकारों का एकमात्र उद्देश्य लगने लगता है. आम चुनाव में मतदाता ने भाजपा को स्पष्ट बहुमत देकर उसके दावों और वादों में विश्वास प्रकट किया था. सरकार को पूरा अवसर दिया था कि उस सबको करके दिखाए जो वोट मांगते समय उसने कहा था. पर सरकार के सामने एक दिक्कत थी- लोकसभा में तो उसे पूर्ण बहुमत प्राप्त है, लेकिन राज्यसभा में अल्पमत में होने के कारण वह बहुत सारे मुद्दों पर स्वयं को असहाय पा रही है. सरकार की यह दिक्कत समझ में आती है, लेकिन जो समझ नहीं आता वह यह है कि ऐसे मुद्दे, जिनमें राज्यसभा की सहमति की सांविधानिक बाध्यता नहीं है, उन्हें सुलझाने में क्या दिक्कत है. और यह बात भी समझ में आनी मुश्किल है कि पूर्ण बहुमत वाली सरकार को नारों और जुमलों में जीने की आदत क्यों पड़नी चाहिए. आकर्षक नारे और लोक-लुभावन जुमले अच्छे तो लगते हैं, पर बहुत दूर तक साथ नहीं देते. साल भर के शासन के बाद अब भारत सरकार को बहुत कुछ ठोस करके दिखाने की जरूरत है.

यह बात अक्सर दुहराई जाती है, और सही भी है, कि साल भर का समय बहुत नहीं होता बहुत कुछ करके दिखाने के लिए. पर दूसरा साल किसी भी सरकार के लिए बहुत महत्वपूर्ण और चुनौती भरा होता है. कुल पांच साल का समय दिया है मतदाता ने भाजपा को.

> आकर्षक नारे और लोक-लुभावन जुमले अच्छे तो लगते हैं, पर बहुत दूर तक साथ नहीं देते. साल भर के शासन के बाद अब भारत सरकार को बहुत कुछ ठोस करके दिखाने की जरूरत है.

यदि इस दूसरे साल में सरकार कुछ ठोस करके नहीं दिखाती तो फिर आगे की राह बहुत ढलवां है, फिसलन भरी भी.

सवाल उठता है, ठोस क्या है जो उसे करना है? सच पूछा जाए तो उसे वही करना है, जिसके उसने वादे किए हैं. वही यानी आम नागरिक की जिंदगी में बेहतरी की दिशा में स्पष्ट बदलाव की निर्णायक कोशिश. विदेशी मोर्चों पर सरकार की कथित सफलताएं अपनी जगह हैं, पर देश के भीतर सकारात्मक बदलाव के प्रति या तो सरकार गंभीर नहीं है या फिर स्वयं को बेबस पा रही है. सबसे पहले किसानों की बात करें. देश की 65 प्रतिशत आबादी आज भी किसानी से जुड़ी है. खेती मुख्य धंधा है हमारा. लेकिन किसान बेहाल है. किसान का जीवन बेहतर बनाने की दिशा में पिछले एक साल से नई सरकार ने कोई ऐसा काम नहीं किया जो आश्वासन देने वाला हो. बैंकों में किसानों के खाते खुलवाने को अपनी उपलब्धि मानने वाली सरकार को यह भी देखना होगा कि इन खातों से किसान की रोजमर्रा की जिंदगी में क्या अंतर आया है. क्या यह सच नहीं कि लगभग डेढ़ लाख करोड़ रुपए की कृषि-सब्सिडी का बड़ा हिस्सा बड़े किसानों और बड़े कारोबारियों के पास पहुंच जाता है? छोटे किसान को, जिनकी संख्या कुल कृषकों के 80 प्रतिशत के करीब है, न सब्सिडी का उचित हिस्सा मिल पाता है और न ही रासायनिक खादों तक उसकी पर्याप्त पहुंच है. यह एक उदाहरण है हमारी कृषि-नीति में खामी का, लेकिन पर्याप्त है यह बताने के लिए कि इस दिशा में वह सब नहीं हो रहा जो होना चाहिए था.

जो दिख रहा है वह यह है कि आम जनता की बुनियादी जरूरतों की ओर ध्यान देने की बजाय सरकार दिखावे के कार्यक्रमों पर ज्यादा जोर दे रही है. उदाहरण के लिए विश्व योग दिवस को ही लें. अच्छी बात है कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने योग की महत्ता को पहचाना है. भारत को इस पर खुश होने का हक भी बनता है. विश्व योग दिवस मनाने का प्रस्ताव भी हमारे प्रधानमंत्री ने रखा था. इस पर भी हम संतोष व्यक्त कर सकते हैं. पर क्या इस सारे आयोजन में यह नहीं लगा कि केंद्र सरकार इसे अपनी उपलब्धि के प्रचार के रूप में देख रही थी?

मोदी सरकार ने आते ही जो पहला काम किया, उसमें योजना आयोग को समाप्त करना शामिल था. ऐसा करके संकेत यह दिया गया था कि अब बुनियादी बदलाव होगा. पर हुआ क्या? उसकी जगह बनाए गए नीति आयोग का अब तक पूरी तरह से गठन भी नहीं हो पाया. यह कम गंभीर बात नहीं है. उतनी ही गंभीर बात स्वायत्त शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षा-मंत्रालय की दखलंदाजी है. युनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन से लेकर तमिलनाडु के एक तकनीकी संस्थान तक में अनुचित हस्तक्षेप के उदाहरण दिख रहे हैं. पुणे के फिल्म इंस्टीट्यूट में जिस तरह से 'युधिष्ठिर' को सर्वेसर्वा बनाया जा रहा है, वह भी ऐसे मामलों में सरकार की अगंभीरता को ही उजागर करता है. सवाल यही नहीं है कि सरकार 'अपने लोगों' को शैक्षणिक संस्थानों पर क्यों थोप रही है, सवाल यह भी है कि क्या सरकारी दल के पास 'योग्य अपने लोगों' की कमी है? ■■

संजीवनी प्रदान करने वाला कर्मयोगी

हर्षवर्धन आर्य
निवासी संपादक,
लोकमत समाचार,नागपुर

नागपुर में रामदासपेठ की सड़कों पर अक्सर एक सामान्य कद का दुबला-पतला व्यक्ति पैदल चलते नजर आ जाता था. जो उनसे अपरिचित थे, वे यह नहीं जानते थे कि बेहद साधारण सा लगने वाला यह व्यक्ति पूरी दुनिया में विख्यात विभूति है और जो उन्हें पहचानते थे, वे खुद को सौभाग्यशाली समझते थे. वह विनम्र एवं आम आदमी लगने वाले व्यक्ति थे विश्वविख्यात न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. जी.एम. टावरी. डॉ. टावरी 18 जून को हमारे बीच से हमेशा-हमेशा के लिए चले गए लेकिन अपने पीछे न केवल डॉक्टरों बल्कि पूरे समाज खासकर युवा पीढ़ी के लिए सेवा की समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं.

महापुरुषों, साधु-संतों तथा महात्माओं में विनम्रता, त्याग, समर्पण, लगन, करुणा, स्नेह तथा अनुशासन जैसे गुण एक समान होते हैं. यही गुण उन्हें असाधारण बना देते हैं, समाज को बदल देने की क्षमता प्रदान करते हैं तथा वंदनीय बना देते हैं. डॉ. टावरी ऐसी ही विभूति थे. अपनी अच्छी-खासी नौकरी और बाद में प्रैक्टिस छोड़कर उन्होंने समाज के जरूरतमंद मरीजों की सेवा के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर देने के लिए बजाज नगर इलाके में सेंट्रल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की स्थापना की. ओपीडी के साथ बेहद सामान्य ढंग से शुरू हुए इस चिकित्सा संस्थान ने देखते-देखते विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर हजारों मरीजों के जीवन में नई आशा का संचार किया.

डॉ. टावरी ने अपने पेशे में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को सर्वोच्च रखा. बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक मरीज की सेवा की. 'सीम्स' के विशाल संस्थान का रूप धारण कर लेने के बाद भी डॉक्टर साहब के नजरिए या व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया. वह सुबह ठीक 7.30 बजे मरीजों को देखना शुरू कर देते थे. मेरे पूर्व सहयोगी शिव शाहू बताते हैं कि एक बार किसी बहुत जरूरी काम के चलते डॉक्टर साहब सुबह 7.35 बजे अस्पताल पहुंचे. इस महापुरुष की विनम्रता देखिए, उसने पांच मिनट देर से आने के लिए प्रत्येक मरीज से पहले माफी मांगी और उसके बाद अपने चेंबर में गए. अगर मरीज तय समय के बाद आया तो उसके पहले आए मरीजों को देखने के बाद ही उसका नंबर आता था, चाहे वह उनका घनिष्ठ मित्र हो या परिवार का कोई सदस्य या अन्य कोई रिश्तेदार अथवा वीआईपी.

डॉ. टावरी के साथ ढाई दशक तक सेवारत रहे प्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. लोकेंद्र सिंह बेहिचक स्वीकार करते हैं कि मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण इस हस्ती ने उन्हें गहराई तक प्रभावित किया. डॉ. लोकेंद्र सिंह तीन वर्ष के लिए विदेश गए थे लेकिन डॉ. टावरी के साथ गरीब मरीजों की सेवा करने की भावना उन्हें फिर से 'सीम्स' में खींच लाई. डॉ. सिंह कहते हैं कि डॉ.

स्मृति शेष

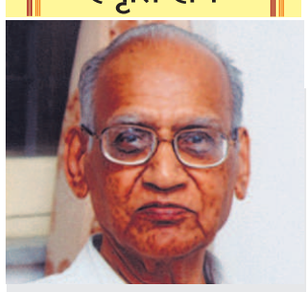

> अंतिम सांस लेने के पूर्व डॉ. टावरी ने 'सीम्स' के अपने तमाम साथियों को मरीजों की नि:स्वार्थ भाव से सेवा करते रहने की सलाह दी.

टावरी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे. समय के पाबंद, मरीज की सेवा के प्रति हमेशा पूरी तरह समर्पित डॉ. टावरी के लिए गरीब का इलाज पहली प्राथमिकता थी. इस कर्मयोगी का मत था कि दूरदराज के इलाके से उनके पास आए साधनहीन मरीज को उनकी सबसे ज्यादा जरूरत है. डॉ. सिंह के मुताबिक अंतिम क्षणों तक वह चैतन्य रहे. अंतिम सांस लेने के पूर्व डॉ. टावरी ने 'सीम्स' के अपने तमाम साथियों को मरीजों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करते रहने की सलाह दी. डॉक्टर साहब के हाथ में संजीवनी थी. चारों ओर से निराश मरीज उनके पास आते थे. डॉक्टर टावरी के हाथों के स्पर्श से वे देखते-देखते स्वस्थ हो जाते थे. वह मरीज को स्वस्थ बनाने के लिए अद्‌भुत समर्पण का परिचय देते थे. आज न केवल विदर्भ, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश या छत्तीसगढ़ बल्कि देश-दुनिया के लाखों मरीजों को उन्होंने नवजीवन प्रदान किया. उनकी प्रतिभा क्षमता तथा विशेषज्ञता की गूंज देश की सीमा तोड़कर पूरी दुनिया में गूंजी और हमेशा गूंजती रहेगी. ■■

सेना का मनोबल बढ़ाने की जरूरत

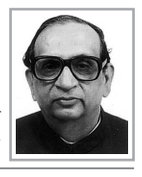

गौरीशंकर राजहंस
पूर्व सांसद एवं पूर्व राजदूत

गत नौ जून को मेजर जनरल रणबीर सिंह की अगुवाई में भारतीय सेना ने म्यांमार की सीमा में घुसकर 20 उग्रवादियों को मार गिराया. उनके दो कैंपों को भी ध्वस्त कर दिया. यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि यह कार्रवाई

> म्यांमार में भारतीय सेना ने जो बहादुरी का काम किया है उसके लिए उसे शाबासी देनी चाहिए. इस सिलसिले में कोई भी आलोचना बेमानी है.

पूर्णतः म्यांमार सरकार और उसकी सेना के सहयोग से संभव हुई. आजादी के बाद पहली बार इस तरह के सैन्य ऑपरेशन से भारत ने उग्रवादियों और आतंकवादियों को कड़ा संदेश दिया है.

गत चार जून को मणिपुर के चंदेल जिले में उग्रवादियों ने 6 डोगरा रेजिमेंट पर रॉकेट चालित ग्रेनेड तथा आधुनिकतम हथियारों से हमला कर 18 भारतीय जवानों की जान ले ली. उसी समय रक्षा मंत्री मनोहर पार्रिकर ने कहा कि जवानों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा. सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री राज्यवर्धन राठौड़ ने एक बयान में कहा कि इस अभियान से उन सभी को सबक लेना चाहिए जो भारतीय हितों को नुकसान पहुंचाते रहे हैं. राठौड़ के इस बयान की निंदा पाकिस्तान की सरकार, वहां के सेना प्रमुख और वहां के विपक्षी दलों ने भी की.

दुर्भाग्य की बात यह है कि सेना के इस अभियान की तारीफ करने की बजाय विपक्ष के नेता सरकार और सेना की आलोचना कर रहे हैं कि उसे इस तरह पड़ोसी देश में घुसकर उग्रवादियों का सफाया नहीं करना चाहिए था.

इसमें कोई संदेह नहीं कि म्यांमार में घुसकर जिस तरह दो उग्रवादी कैंपों को तहस- नहस किया गया उसका निर्णय स्वयं प्रधानमंत्री ने लिया होगा. म्यांमार के सैनिक ऑपरेशन से न केवल सेना का मनोबल बढ़ा है, बल्कि सारे भारत की जनता हर्षोल्लास के साथ कह रही है कि ऐसा तो पाकिस्तान के साथ भी होना चाहिए. हम पाकिस्तान के साथ ऐसा कर पाएंगे या नहीं, यह अलग बात है. परंतु चेतावनी तो पाकिस्तान को मिल ही गई है. कहने का अर्थ है कि यदि किसी पड़ोसी देश से आतंकवादी या उग्रवादी दूसरे देश में आकर आतंकी हरकत करते हुए उसकी सेना या नागिरकों की जान ले लें तो सेना को यह पूरा हक है कि उन आतंकवादियों या उग्रवादियों का दूसरे देश में जाकर सफाया कर दे. 'इन्टरनेशनल लॉ' में ऐसा करना न्यायोचित माना गया है. अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बुश का कहना था कि यदि किसी पड़ोसी देश में दूसरे पड़ोसी देश से आतंकी आक्रमण की तैयारी हो रही है तो चढ़ाई करके आतंकवादियों का सफाया कर देना चाहिए. म्यांमार में भारतीय सेना ने जो बहादुरी का काम किया है उसके लिए उसे शाबासी देनी चाहिए. इस सिलसिले में कोई भी आलोचना बेमानी है. ■■

क्लिक

यह सुप्रसिद्ध रोप ब्रिज उत्तरी आयरलैंड के काउंटी एंट्रिम के पास बालिनटाय के नजदीक है. इस रोप ब्रिज की लंबाई 66 फुट और ऊंचाई 90 फुट से अधिक है. पुल को देखने लाखों पर्यटक आते हैं.

धर्मराज के नाम पर अन्याय के खतरे

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

'धर्मराज' का चरित्र विश्व इतिहास में मिलना दूभर है. जीवन मूल्यों और आदर्शों के लिए सब कुछ बलिदान करने वाला व्यक्तित्व. भीषण संघर्ष और युद्ध में नियम-विधान के पालन पर अडिग व्यक्ति. विद्वता में सर्वश्रेष्ठ. ऐसे 'धर्मराज युधिष्ठिर' को महाभारत टी.वी. श्रृंखला में देखकर लाखों लोग प्रभावित हुए. निश्चित रूप से पर्दे पर दिखने वाले व्यक्ति अभिनय करने वाले पात्र होते हैं. लेकिन दूरदर्शन अथवा अन्य निजी टी.वी. चैनलों का एक लक्ष्य समाज में कुछ आदर्शों, नैतिक मूल्यों की याद दिलाना तथा उनके अनुसरण का संदेश देना भी रहा है. अब धर्म, ईमानदारी और नैतिकता के बल पर देश को नई दिशा देने का दावा करने वाली मोदी सरकार ने प्रतिष्ठित फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट पुणे में 'धर्मराज' के नाम से प्रसिद्धि पाए कलाकार गजेंद्र चौहान को अध्यक्ष मनोनीत कर दिया. फिल्म टेलीविजन की विभिन्न विधाओं की शिक्षा-दीक्षा की कमान संभालने के लिए क्या मात्र चेहरे और दूसरों के लिखे संवाद को पचीसों री-टेक के बाद बोल देने की कला पर्याप्त है? फिल्म टी.वी. उद्योग से जुड़ी हस्तियां अथवा इस संचार माध्यम से भविष्य के सपने संजोने वाले लोग इस बात को गले नहीं उतार सकते हैं. तभी तो राजनीति से परे पुणे फिल्म इंस्टीट्यूट के छात्रों ने इस नियुक्ति के विरुद्ध झंडा उठाकर हड़ताल तक कर दी. पराकाष्ठा यह है कि 'धर्मराज' की परंपरा के विपरीत अधर्मी दुर्योधन के संवादों की तरह गजेंद्र चौहान ने अपने को श्याम बेनेगल, गुलजार जैसे

विश्व प्रसिद्ध फिल्मकारों से कम न आंके जाने का दावा कर दिया.

मोदी सरकार फिल्म इंस्टीट्यूट के छात्रों को अबोध अपरिपक्व कह सकती है, लेकिन वह अपने सांसदों, दिल्ली-मुंबई के सामान्य पत्रकारों-शिक्षकों के बीच सर्वेक्षण करवाकर पता लगाए - 'गजेंद्र चौहान के नाम को कितने लोग जानते हैं? श्याम बेनेगल, गुलजार जैसे कई फिल्मकार हैं, जो स्वयं अथवा सही नामांकन के जरिए फिल्म इंस्टीट्यूट को सही नेतृत्व और नई दिशा दे सकते हैं. सलाहकार समितियों अथवा उपभोक्ता समितियों में कुछ कम योग्य व्यक्ति राजनीतिक विचारों के लिए रखना मजबूरी हो सकती है. लेकिन महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानों अथवा राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में केवल राजनीतिक और सत्तारूढ़ नेताओं के प्रति निष्ठा के आधार पर नियुक्तियां संस्थान के साथ समाज और देश के भविष्य के साथ खिलवाड़ है. मनमोहन सिंह सरकार ने भी बैंकों में ऐसी गलत नियुक्तियां कीं.

इसी तरह कई शैक्षणिक संस्थानों, लाइब्रेरी मिशन तथा आयोगों में ऐसे पसंदीदा लोगों को नियुक्त किया जिन पूर्व सत्ताधारियों की नजीर देकर बड़ी गलतियां करना, मनमानी नियुक्तियों अथवा अध्यक्षता से संस्थानों को पंगु बनाने से क्या दूरगामी हितों की रक्षा हो सकेगी? ■■

तोल बोल

जिस तरह से हर व्यक्ति अलग होता है, उसी तरह से उसके खेलने और कप्तानी करने का तरीका अलग होता है.
■ महेंद्र सिंह धोनी, वन डे क्रिकेट टीम के कप्तान

नरेंद्र मोदी से मैं उस दिन से ही निराश हो गया, जिस दिन उन्होंने अपना मंत्रिमंडल बनाया. उन्होंने जिन्हें वित्तमंत्री बनाया, उनका मैं बड़ा आलोचक हूं.
■ राम जेठमलानी, वरिष्ठ अधिवक्ता

gñWmnH$ gmoXH$:
ñd. OdmhabmoB XSm
M`a Z, E[SQ>{a`b ~mS :
{dO~ XSm
E{SQa-BZ-Mr\$:
amOÊ XSm
gmoXH :
{dH$mg {_I ★
★ nr. Ama. ~r. H$moZZ H$
AZgma gnU gmoXH$s` Xm{`Ed
H$ {bE {Oâ_Xma.

© लोकमत समाचार _ àH$m{eV g^r gm_Jr H$m gdm{YH$ma bmH$_V _r{S`m àm`dQ {b. H$ mng ga{jV h.
bmH$_V _r{S`m àm`dQ {b. H$ {bE _ÐH$ Ed àHmeH बालाजी मुले Ûmam bmH$_V _r{S`m àm.! {b., ßbmQ H$. 192, 207, 208 E_. AmB. Sr. gr. B'S{ñQ`b E{a`m, ~Qr~mar, `ZmJna _{ÐV Ed bmH$_V ^dZ n. OdmhabmoB Zhê$ _mJ, ZmJna _ àH$m{eV.

P.O.BOX NO. 230 R.N.I. No. 47101/89
XaÜd{Z : 0712-2423527 (7 bmB'g) \$Šg : 6618555
Email : gmoXH$s` : lsedit.ngp@lokmat.com
{dkmZ : advt.ngp@lokmat.com {dVaU : circ.ngp@lokmat.com

इतिहास पर नजर 19 जून

दुनिया में फादर्स डे मनाने की परंपरा अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन में 19 जून 1910 को शुरू हुई थी. सोनोरा स्मार्ट डोड नामक युवती ने अपने पिता को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए कुछ नया तरीका ढूंढ़ने का विचार किया और उसे 'फादर्स डे' के रूप में साकार भी किया. सोनोरा ने बचपन में ही अपनी मां को खो दिया था. उनके पिता ने दुबारा विवाह नहीं किया और बच्ची का पालन-पोषण किया. सन 1924 को तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति कैलविन कुलीज ने 19 जून को फादर्स डे पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया. सन 1972 में उस वक्त के अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने हर वर्ष जून के तीसरे रविवार को 'फादर्स डे' घोषित कर दिया. ■■

- 1464-फ्रांस में डाक सेवा शुरू
- 1747-फारस के राजा नादिर शाह की हत्या.
- 1862-अमेरिका ने दास प्रथा को अवैध घोषित किया.
- 1932-चीन में तूफान से 200 की मौत
- 1945-बर्मा (अब म्यांमार) की नोबल शांति पुरस्कार विजेता राजनेता आंग सान सू की का जन्म.
- 1947-प्रसिद्ध लेखक सलमान रुश्दी का जन्म.
- 1961-कुवैत को ब्रिटेन से आजादी मिली.
- 1966-शिवसेना की स्थापना बालासाहब ठाकरे ने की.
- 1981-भारत ने एप्पल उपग्रह छोड़ा.

पाठकों के पत्र

अतिक्रमण हटाने में पक्षपात न हो

वर्तमान में अतिक्रमण हटाओ अभियान सम्पूर्ण मध्य प्रदेश में द्रुतगति से जारी है. यह अतिक्रमण हटाओ अभियान समय-समय पर जारी रहता है. इसमें शासकीय भूमि पर जो व्यापारी फुटपाथ पर अपनी दुकानें लगाते हैं, उन्हें हटाया जाता है.

इसी क्रम में शहरों में भी कुछ व्यापरी अपनी दुकानों के सामने अतिक्रमण कर यातायात व्यवस्था में अवरोध पैदा किया करते हैं जिससे कभी-कभी दुर्घटनाएं भी हुआ करती हैं. अतिक्रमण हटाओ अभियान से रोज कमाने-खाने वालों की शामत आ जाती है.

अतिक्रमण करने वालों के लिए जब तक वैकल्पिक व्यवस्था न हो, तब तक उन्हें नहीं हटाया जाना चाहिए. सबसे महत्वपूर्ण बात है कि अतिक्रमण हटाने में पक्षपात नहीं किया जाना चाहिए. अगर अतिक्रमण हटाया जाता है तो सबका हटाना चाहिए.

■ बी.सी. उके, सिवनी

खुशबू की कीमत

राह चलते एक भिखारी को किसी ने चंद रोटियां दे दीं लेकिन साथ में खाने के लिए सब्जी नहीं दी. भिखारी एक सराय में गया और उसने सराय-मालिक से खाने के लिए थोड़ी सी सब्जी मांगी. सराय-मालिक ने उसे झिड़क दिया. भिखारी नजर बचाकर रसोई में घुस गया. चूल्हे के ऊपर उम्दा सब्जी पक रही थी. भिखारी ने देग से उठती हुई भाप में अपनी रोटियां इस उम्मीद से लगा दीं कि सब्जी की खुशबू से कुछ जायका तो रोटियों में आ ही जाएगा. अचानक सराय-मालिक आ धमका और सब्जी चुराने का इल्जाम लगाने लगा.

विविध

''मैंने सब्जी नहीं चुराई!'' भिखारी बोला ''मैं तो सिर्फ खुशबू ले रहा था!''

''तो फिर तुम खुशबू की कीमत चुकाओ!'' सराय-मालिक बोला.

भिखारी के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी. सराय-मालिक उसे घसीटकर काजी मुल्ला नसरुद्दीन के पास ले गया.

''तो तुम्हें खुशबू की कीमत चाहिए?'' मुल्ला ने सराय-मालिक से पूछा.

''जी, आपकी बड़ी महरबानी होगी.'' सराय-मालिक बोला.

''ठीक है. मैं खुद तुम्हें तुम्हारी सब्जी की खुशबू की कीमत अदा करूंगा'' मुल्ला बोला ''और मैं खुशबू की कीमत सिक्कों की खनक से चुकाऊंगा.''

यह कहकर मुल्ला ने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें हथेली में लेकर जोरों से खनकाया और उन्हें वापस अपनी जेब में रख लिया.

ठगा सा सराय-मालिक और हैरान भिखारी, दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए. ■■